UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : **History**
Research Link - 166, Vol - XVI (11), January - 2018, Page No. 123-124
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

# छत्तीसगढ़ के हरेली तिहार में भूमि एवं भित्ति चित्रण कला

*प्रस्तुत शोधपत्र में छत्तीसगढ़ के हरेली तिहार में भूमि एवं भित्ति चित्रण कला का अध्ययन किया गया है। भूमि एवं भित्ति चित्रण कला में सबसे विशिष्ट किस्म का चित्रण हरेली तिहार में किया जाता है, जो जादू व टोना-टोटका से सम्बंधित होता है। इसे छत्तीसगढ़ का पहला तिहार माना जाता है, यह तिहार अषाढ़ मास की अमावस्या को मनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में हरेली अमावस्या और इसकी गहरी काली रात का विशेष महत्व होता है, जिससे सभी डरते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के तिहार में इस दिन-विशेष को लेकर तरह-तरह की डरावनी किवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। इससे पहले इसी डर को दूर करने शनिवार की रात को सभी किसान देवी-देवता की पूजा करते हैं। उसके पश्चात् पूर्व दिशा में जाकर भूमि चित्रण स्वरुपा गाँव के बैगा द्वारा जमीन पर आड़ी-तिरछी रेखायें बनाकर रेंगानी रेंगाया जाता है। इस तिहार में रेंगानी के रुप में बनाये जाने वाले भूमि चित्रण कला का विशेष महत्व है।*

**प्रो.दिनेश नंदिनी परिहार* एवं अंकुश कुमार देवांगन****

**प्र**स्तावना :

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में वर्ष भर कुछ न कुछ व्रत, तिहार एवं पर्व मनाये जाने की परंपरा आदिकाल से विद्यमान है। यहां सभी पर्व/तिहार सामूहिक रूप से पारंपरिक रीति–रिवाज के अनुसार बड़े ही श्रद्धापूर्वक मनाये जाते हैं। हर तिहार पर गाँव–गाँव में सुबह से ही घर–आंगन को लीप बुहार कर भूमि में भूमिचित्रण और भित्ति में भित्तिचित्रण बनाये जाने की परंपरा रही है। छत्तीसगढ़ की ग्रामीण संस्कृति आदिवासी संस्कृति का पोषक है, क्योंकि यहाँ जन–जातियों की बहुलता है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी जंगली संस्कृति और पुरापाषाण कालीन रीति–नीतियों का निर्वहन करते आ रहे हैं, जिसमें तंत्र–मंत्र की परंपरा एवं बैगा गुनिया की भी विशेष भूमिका है। बैगा का कार्य लोकहित में झाड़फूंक करना है, माना जाता है कि वह गांव को विभिन्न पैशाचिक विपत्तियों से बचाता है, तथा उसके उपाय भी बताता है।

**हरेली का अर्थ :** हरेली शब्द हरियाली का बोध करवाती है, जो खुशहाली व संपन्नता का प्रतीक है। इस दिन गाँव का चरवाहा अपने मालिक, किसान या ठाकुर के दरवाजे में नीम पेड़ की डालियां खोंचते हैं और उनके स्वास्थ्य, उन्नति एवं खुशहाली की कामना करते हैं। इसके बदले उन्हे रूपया और दाल, चावल, तेल, घी, नमक, मिर्च, साग इत्यादि दिया जाता है। आज के दिन किसान अपने हल औजारों आदि की सफाई भी करता है। इन औजारों पर चन्दन, कुमकुम, हल्दी, फूल, आदि चढ़ाकर भित्तिचित्रण के विशिष्ट स्वरूप में हाथा देता है। खेतों के औजारों को आज के दिन उपयोग में नही लाया जाता, उसे घर में सजा कर रखा जाता है। इस त्यौहार में घर पर पाले गये पशुओं के स्वास्थ्य की भी कामना की जाती है। उन्हें नहला–धुलाकर खिचड़ी खिलायी जाती है। इस खिचड़ी में सभी प्रकार के सब्जियों एवं अनाज को

मिलाकर ''लोंदा' बनाया जाता है और उसे पशुओं को खिलाते हैं। खिचड़ी खिलाने के पीछे ऐसी मान्यता है कि इससे पशुओं को कोई बीमारी नही होती, और वे स्वस्थ रहते हैं।

**जादू–टोना :** स्थानीय स्तर पर हरेली तिहार जादू–टोना के लिए कुख्यात है। इसे ग्रामीण क्षेत्रों में अंधविश्वास स्वरूप टोनही लोगों का खास पर्व माना जाता है। हालांकि आज के समय में किसी को टोनही कहना संज्ञेय अपराध माना जाता है। इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसी निर्मूल आशंकायें आज भी जीवित है कि अपने दुश्मनों का बिगाड़ करने इस दिन वे तंत्र–मंत्र सीखती हैं।

कहा जाता है कि हरेली की रात टोनही विद्या सीखने के लिए गुरू महिला अकेली निर्वस्त्र होकर व बाल खोलकर शमशान जाती है, झूम–झूमकर अपने शैतान देवता को प्रसन्न करती है। जिससे उसे किसी का काम बिगाड़ने, दुश्मन को असुविधा में डालने तथा उसे जान से मारने की विद्या प्राप्त हो जाती है। इस रात जब वह शमशान से लौटती है, और गलती से भी उसकी किसी से भेंट हो जाये तो वह उसे भख (भक्ष) लेती है/ मार

**विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययन शाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*
***शोधार्थी प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययन शाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)*

डालती है और उसके प्राण को खा जाती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में हरेली की रात डर के मारे कोई भी घर से बाहर नही निकलता, अंदर बड़े जोर से दरवाजों को बंद कर लिया जाता है। इन्ही सब जादू–टोना की मान्यताओं के चलते गाँव–गाँव में इन विपत्तियों से बचने घरों पर गोबर से भित्तिचित्रण का निर्माण किया जाता है। लंबी लकीरों से घर को बांधा जाता है, ऐसी मान्यता है कि गाय के गोबर में वह पवित्र शक्ति है, जो अनिष्ट की आशंका को निर्मूल साबित कर देती है। इस दिन घर की दीवारों को चारों ओर गोबर से विशेष किस्म का भित्तिचित्र बनाकर और साखियां बनाकर रेखांकित किया जाता है। मान्यता है कि भित्तिचित्रों के निर्माण से नजर या जादू–टोना का प्रभाव परिवार के लोगों पर नही पड़ता और वे स्वस्थ खुशहाल रहते हैं। सूर्योदय से पहले ग्रामीण महिलाएँ उठकर अपने–अपने घरों में गौमाता के गोबर से लंबी लाइन खींचकर पूरे घर को घेर डालती हैं। इस लाईन के बीच में मानव आकृतियाँ बनाई जाती है। पूर्वजों का मानना है कि गोबर रेखा से घिरे घर में किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती, यह क्रम पाँच रविवार तक लगातार जारी रहता है, जिसे हर गाँव में इतवारी तिहार के नाम से जाना जाता है। यह चित्रण प्राचीनकालीन गुफामानव के गुफाओं में बनाये जाने वाले चित्रों की याद ताजा करवा देती है, जो आज के मानव को आदिकाल के मानव से जोड़ता है, क्योंकि वे भी गुफाओं में जादू–टोना से बचने के लिए इस प्रकार के चित्रण किया करते थे। इन विपत्तियों से बचने भित्तिचित्रण के अलावा घर–घर में नीम के पत्ते आंगन व दरवाजे के ऊपर खोंचे जाते हैं।

**हरेली तिहार में भूमि एवं भित्तिचित्रण कला :** भूमि एवं भित्तिचित्रण कला में सबसे विशिष्ट किस्म का चित्रण हरेली तिहार में किया जाता है, जो जादू व टोना–टोटका से संबंधित होता है। इसे छत्तीसगढ़ का पहला तिहार माना जाता है, यह तिहार अषाढ़ मास की अमावस्या को मनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में हरेली अमावस्या और इसकी गहरी काली रात का विशेष महत्व होता है, जिससे सभी डरते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के तिहार में इस दिन–विशेष को लेकर तरह–तरह की डरावनी किवदंतियां भी प्रचलित है। इससे पहले इसी डर को दूर करने शनिवार की रात को सभी किसान देवी–देवता की पूजा करते हैं। पश्चात पूर्व दिशा में जाकर भूमि चित्रण स्वरूपा गाँव के बैगा द्वारा जमीन पर आड़ी–तिरछी रेखायें बनाकर रेंगानी रेंगाया जाता है। इस तिहार में रेंगानी के रुप में बनाये जाने वाले भूमि चित्रणकला का विशेष महत्व है, तथा इस रस्म के दौरान कोई भी व्यक्ति पीछे मुड़कर नही देखता। यदि कोई देखे तो उसे काफी हानि होगी ऐसा माना जाता है। हरेली के दिन खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में एक और परम्परा निभाई जाती है। माना जाता है कि टोनही, और काला जादू वालों के लिए आज की रात सबसे खास होती है, सो भूत–प्रेत और जादू–टोना से गाँव की रक्षा हेतु गाँव के बैगा आखिरी सीमा में जाकर एक अभिमंत्रित खीला जमीन पर गाड़ता है। इसके आधार पर माना जाता है कि गाँव में कोई आपत्ति नहीं आयेगी और गाँव में किसी प्रकार की महामारी हैजा, प्लेग, माता, धूकी आदि बीमारी का प्रभाव नही पड़ेगा। हरेली तिहार की रात्रि को बैगा और टोनही भी अपने मंत्रों की सिद्धि करते हैं और नये शिष्य बनाकर उनकी परीक्षा लेते हैं। हरेली को खतरनाक तिहार माना जाता है और रात आते–आते ग्रामीणजन दहशत जदा हो जाते हैं।

**फुगड़ी खेल :** छत्तीसगढ़ में हरेली तिहार का उत्साह हर किसी के सिर चढ़कर बोलता है, छोटे बच्चे हों या बड़े सबमें इसका खुमार दिखता है। इस दिन तरह–तरह के गीत गाये जाते हैं। लड़कियाँ उकडू बैठकर तेज गति से दोनों पंजों को आगे पीछे चलाती है, जिसे फुगड़ी खेलना कहते हैं। जो ज्यादा देर तक फुगड़ी खेले वह जीत जाती है और जो थक कर रूक जाये वह हार जाती है।

इस दौरान लड़कियाँ व महिलाएँ सामूहिक गीत गाती हैं, गीत के बोल निम्न है............

***गोबर दे बछरू गोबर दे.......***
***सबो खूंटा ला लीपन दे ....***
***अपन खाथे गुदा–गुदा,***
***मोला देथे बीजा....***
***ये बीजा ला का करों....***
***रही जाहूं तीजा....***

हरेली तिहार और गेंड़ी : हरेली के दिन बच्चे व बड़े सभी ऊँचे–ऊँचे बास की गेंड़ी बनाते हैं और गाँव में घूमते हैं। खूब मस्ती के इस पर्व में बच्चे तो बच्चे बड़े भी उत्साह से गेंड़ी चढ़ते हैं। गेंड़ी के विशालता की कल्पना इसी बात से की जा सकती है कि इसमें चढ़ने के लिए घर के छत का भी उपयोग किया जाता है। गाँवों में गेंड़ी दौड़ का कार्यक्रम किया जाता है, जिसे देखने पूरा गाँव एकत्रित होता है।

***संदर्भ :***

*(1) शर्मा, निरुपमा (2015) : 'लोक पर्व हरेली', कला परम्परा, पृ. 48–49.* ***(2)*** *चंदेल, गोरेलाल : 'हरेली', अंक–6, वर्ष–2015, पृ. 51–53.* ***(3)*** *पतंगीवार, प्रकाश (2015) : 'लोक विश्वास का पर्व है हरेली', पृ. 61–63.* ***(4)*** *यादव, पी. सी. लाल (2015) : 'हरेली और खेल की लोक परंपरा', पृ. 54–58.* ***(5)*** *शर्मा, पालेश्वर (2015) : 'हरेली कृषकों का उल्लास पर्व', कला परम्परा, छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार, पृ. 47.*

❁ ❁